Bodhi-Path Year 2022 July Issue Volume 23 Page No 20-48

बोधिसत्त्व की साधना में दस भूमियों की उपादेयता

डॉ० गोविन्द कुमार मीना
शोधार्थी
पालि एवं बौद्ध अध्ययन विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
E.mail : govind@bhu.ac.in
Contact no: 8180931661

शोध सारांश – भारत में अर्वाचीन काल से ही परम्परा रही है, जिसमें साधना पर सर्वाधिक बल दिया गया है। साधना से ही व्यक्ति अपने चित्त में स्थिरता का भाव उत्पन्न करता था। बौद्ध ग्रन्थों में चित्त को आधार बनाते हुए कार्य करने पर अधिक जोर दिया गया है। यहाँ तक की बौद्ध ग्रन्थ 'धम्मपद' की प्रथम दो गाथाएँ चित्त को आधार बनाते हुए लिखी हुयी है, जिसमें बताया गया है कि चित्त से प्रेरित होकर व्यक्ति जिस प्रकार कार्य करता है तब उनके परिणाम उसके पीछे ऐसे ही रहते हैं जिस प्रकार व्यक्ति के पीछे उसकी छाया रहती है। अकुशल कर्मों का विपाक अकुशल ही रहता है।

बोधिसत्त्व बौद्ध साहित्य में वर्णित एक ऐसी अवधारणा है, जो परहित को आधार बनाते हुए जीवन जीने में विश्वास रखता है। उस परहित को आधार बनाने के पश्चात उसे स्वयं ही साधना के कई सोपानों को पूर्ण करना पड़ता है। जिसमें से भूमियों की अवस्था भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। जीवन को

वास्तविक रूप में समझने में साधना का योगदान मनुष्य जीवन में अहम् होता है। एवं साधकों हेतु तो यह जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य होता है।

यह भूमियाँ ही बोधिसत्त्व को यथार्थ भाव प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करती है। क्योंकि ये ही परत-दर-परत उसके अन्दर बदलाव एवं सामर्थ्य का बोध कराती है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में बोधिसत्त्व से लेकर एक-एक भूमि वाली अवस्था का विस्तार से वर्णन किया जायेगा, जो कहीं न कहीं बोधिसत्त्व की उस अध्यात्मिक यात्रा को समझने में सहायता प्रदान करेगा, जो उसकी साधना का सबसे दुर्गम पथ माना जाता है।

कूट शब्द- बोधिसत्त्व, भूमियाँ, साधना एवं चित्त।

विषय प्रवेश - भगवान् बुद्ध के महापरिनिर्वाण के अनन्तर बौद्ध धर्म में एक पुष्ट परम्परा विकसित हुयी थी, जो मूलतः भगवान् बुद्ध की देशनाओं से ही प्रेरित थी। इसमें अर्हत एवं बोधिसत्त्व प्रमुख थे। साधना पूर्ण करने के क्रम में स्वयं के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विकास करके सामान्य जनों के जीवन को प्रभावी एवं उत्कृष्ट बनाने हेतु उनका योगदान अतुलनीय है। बौद्ध परम्परा में बोधिसत्त्व की अवधारणा का वृहतर रुप से सर्वाधिक विकास हुआ। बोधिसत्त्व की

यह प्रतिज्ञा जिसमें वह समग्र संसार के उन प्राणियों को बोधिलाभ करवाने का दृढ़-संकल्प लेते हैं, जो इस संसार की जटिलताओं को अपने चित्त पर जमी अविद्या के आवरण के कारण देखने में असमर्थ रहता है, एवं उसके परिणामस्वरुप निरन्तर दुःख का निर्माण करके अनवरत् रुप से दुःखी रहता है। उन्हीं लोगों को दुःख से मुक्त कराने को ही अपने जीवन का परम उद्देश्य बनाकर ही बोधिसत्त्व रत रहता है। यही प्रमुख कारण है कि भगवान् बुद्ध के पश्चात ही बोधिसत्त्व की परम्परा ने जनकल्याण हेतु स्वयं को समर्पित किया।

बोधिसत्त्व दो शब्दों के संयोजन से बना है, यथा- 'बोधि तथा सत्त्व'। बोधि शब्द सम्यक् ज्ञान, लोकोत्तर प्रज्ञा, सर्वज्ञता, सम्यक् सम्बोधि का अधिवचन है एवं सत्त्व का अभिप्राय प्राणी, मनुष्य या मानव से हैं। अतः बोधिसत्त्व ऐसा प्राणी होता है जो सम्यक् सम्बोधि को प्राप्त करने के लिए अनवरत प्रयत्नशील रहता है। सम्यक् सम्बोधि का लाभ लेना उसके जीवन का एकमेव उद्देश्य होता है।[1] और दूसरे मनुष्यों को सम्बोधि के लाभ का अधिकारी बनाना। स्पष्ट शब्दों में सम्बोधि लाभ के अनन्तर बुद्ध या सम्यक् सम्बुद्ध नाम से अभिज्ञात पुरुषविशेष के पद बुद्धत्व के लाभ की इच्छा से सम्यक् मार्ग प्रतिपन्न सत्त्व को बोधिसत्त्व कहा जाता है।[2] प्राणिमात्र के मूलभूत दुःख जन्म, जरा, व्याधि एवं मरण

---

[1] Drewes, David, *Mahāyāna Sūtras and Opening of the Bodhisattva Path*, Paper presented at the XVIII the IABS Congress, Toronto 2017

[2] Gyatso, Geshe Kelsang *The Bodhisattva Vow: A Practical Guide to Helping Others*, Tharpa Publications, p.1

के अशेष प्रहाण के उद्देश्य से बोधिसत्त्व की चर्या प्रारम्भ होती है। बोधिसत्त्व का जीवन एक सामान्य मनुष्य की तरह होता है और उसी में बुद्धत्व लाभ लिया जाता है। संसार के समस्त प्राणी जगत को बोधिलाभ करवाने तक साधक अपनी सम्बोधि को स्थगित करता है।

बौद्ध परम्परा में बोधिसत्त्व पूर्णतः अनासक्ति के साथ अपने सर्वस्व का परित्याग कर प्राणीमात्र के कल्याण के लिए उद्योग करता है। उसके जीवन का मुख्य उद्देश्य ही स्वयं के हितों को स्थगित करके परहित रत होना है। बोधिसत्त्व ऐसा चिन्तन करते हैं कि "व्याधि दूर होने तक मैं रोगियों के लिए औषध बनूँ, वैद्य भी बनूँ, और परिचारक भी बनूँ। दरिद्र प्राणियों के लिए मैं अक्षय निधि बनूँ और नाना प्रकार के उपकरणों से उनके आगे उपस्थित रहूँ। जिन-जिन कार्यों से उन्हें सुख मिलता हो वे कार्य मेरे शरीर से करवाएं। मेरे कारण किसी का अनर्थ न हो"।[3] उसके अन्दर चित्त 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' की भावना रहती है। अपने शरीर, मन एवं वाणी की दारूण वेदनाएँ भी उसे अपने पथ से किन्चित मात्र भी विचलित नहीं कर पाती हैं। वह अपने उद्देश्य के प्रति दृढ़-संकल्पित रहता है, किन्तु क्षण भर में किसी दूसरे मनुष्य को कष्ट में देखकर उसे असह्य दुःख

---

[3] *ग्लानानामस्मि भैष्ज्यं भवेयं वैद्य एव च, तदुपस्थायाक श्चैव यावद रोगापुनर्भव।*
दरिद्राणा च सत्त्वानां निधिः स्यामहमक्षयः, नानोपकरणा कारैरूपतिष्ठयमग्रतः।
कारयन्तु च कर्माणि यानि तेषां सुखावहं, अनर्थः कस्य चिन्मा भून्मामालम्ब्य कदाचन।।-
बोधि० च०, पृ. 59

उत्पन्न होता है। उसी अलौकिक व्यक्तित्व को ही बौद्ध दर्शन में बोधिसत्त्व कहा गया है।

बोधिसत्त्व की साधना में भूमियाँ

बोधिसत्त्व की साधना का सम्पूर्ण भाग कई भागों एवं अवस्थाओं में वर्गीकृत होता है। एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाने तक साधना क्रम निर्बाध रूप से जारी रहती है, और यह क्रम तब तक जारी रहता है जब तक बोधिसत्त्व बुद्धत्व लाभ नहीं कर लेता है। यह अवस्था ही भूमि या विहार के नाम से जानी जाती है। इन भूमि में ही बोधिसत्त्व पारमिताओं की साधना करता है। जैसे-जैसे वह साधना के क्रम में आगे बढ़ता जाता है तो उसी साधना एवं भूमियों के क्रम में वृद्धि होती रहती है। बौद्ध धर्म की परवर्ती सभी परम्पराओं में बोधिसत्त्व की साधना के क्रम में भूमियों को आवश्यक माना है।

महावस्तु, प्रज्ञापारमिता सूत्र एवं *दसभूमिक सूत्र* में इनकी संख्या दस मिलती है और वही *बोधिसत्व भूमि* में दस भूमि एवं तेरह विहार का वर्णन मिलता है। भूमियों का क्रम पारमिताओं के समकक्ष रहता है, किन्तु अन्त की भूमि वाली अवस्था में ऋद्धि एवं चमत्कारपूर्ण सिद्धियों का लाभ बोधिसत्त्व को होता है।

बौद्ध धर्म जम्बुद्वीप से संसार में अनेक स्थानों पर प्रसारित हो रहा था, तब उन प्रचारकों ने उस स्थान की लोक संस्कृति को स्वीकार करके ही उसी में सद्धर्म का प्रसार किया। इस क्रम में उन्होंने ऋद्धि-बल पर आधारित चमत्कार

के प्रयोग करके लोगों के मन में बौद्ध धर्म के प्रति असीम आस्था बनायीं। ऐसे ऋद्धि-बल की सिद्धि इन्हीं भूमियों की साधना क्रम में सम्भव होती थी।

प्रारम्भिक बौद्ध धर्म के सम्प्रदाय थेरवाद में साधना का विकास क्रम प्रारम्भ होने पर चार अवस्थाओं का विकास हुआ। इसके अतिरिक्त पालि परम्परा में तीन विहार इस प्रकार वर्णित किये गए है- क्रमशः दिव्यविहार, अरियविहार एवं ब्रह्मविहार। श्रावक की सात भूमियों के बारे में *महाव्युत्पत्ति* नामक ग्रन्थ में वर्णन मिलता है।

1.सांसारिक (पृथकजन)	1. शुक्लविदर्शनाभूमि
	2. गोत्र भूमि
2. श्रावक	3. अष्टामक भूमि
	4. दर्शना भूमि
	5. तनु भूमि
	6. वीतरागभूमि
	7. कृतावी भूमि
3. प्रत्येकबुद्ध	8. प्रत्येकबुद्धभूमि
4. बोधिसत्त्व	9. बोधिसत्त्वभूमि

5. बुद्ध	10. बुद्धभूमि

सारणी- 1 : प्रज्ञा एवं करूणा की साधना हेतु भिन्न अवस्थाएँ[4]

महायान सम्प्रदाय में भूमियों की संख्या दस मानी जाती है किन्तु प्रारम्भिक महायान में भूमियों की संख्या सात थी। *दसभूमिकसूत्रग्रन्थ* की लोकप्रियता ने भूमियों की संख्या को निश्चित किया। बोधिसत्त्व भूमि में सात भूमियों के बारे में चर्चा मिलती है। उसी प्रकार *लंकावतारसूत्र* में भी सात भूमियों की जानकारी तो मिलती है किन्तु भूमियों के बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती है। *महावस्तु* नामक ग्रन्थ में दस भूमियों का वर्णन मिलता है पर इसमें स्पष्ट रूप से सात भूमियों की ही जानकारी मिलती है। इसमें चार, नौ एवं दस के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं मिलती है। इसके अतिरिक्त *दसभूमिकसूत्र* में दस भूमियों के बारे में स्पष्ट जानकारी मिलती है। महायान सम्प्रदाय में बोधिसत्त्व के बारे में माना जाता है कि उसे सातवीं भूमि में ही दस पारमिताओं की साधना करनी पड़ती है।

थेरवाद एवं महायान में साधना की अवस्थाएँ

महावस्तु में वर्णित भूमि	दसभूमिकसूत्र में वर्णित अवस्थाएँ
1. दुरारोहा	प्रमुदिता

[4] Hirakawa akira, *A history of Indian Buddhism from Sakyamuni to Early Mahayana*, united state of America : university of Hawaii press (1990) p. 306

2. बद्धमाना	विमला अथवा अधिशील
3. पुष्प-मंडिता	अधिचित्त-विहार या प्रभाकरी
4. रूचिरा	अर्चिष्मति
5. चित्तविस्तरा	सुदर्जया
6. रूपवती	अभिमुखी
7. दुर्जया	दूरंगमा
8. जन्मा-निदेस	अचला
9. यौवराज	साधुमती
10. अभिषेक	धर्ममेघा

थेरवाद एवं महायानी निकाय परम्परा में भूमियों की संख्या में प्रायः भेद दृष्टिगत होता है, जो ऊपर की सारणी से स्पष्ट होता है। भूमियों का प्रायः विस्तार से वर्णन *दसभूमिकसूत्र* नामक ग्रन्थ में मिलता है।

प्रथम भूमि (प्रमुदिता)

आध्यात्मिक पथ पर दूर-सुदूर एवं कठोर यात्रा करने के लिए बोधिसत्त्व जो भविष्य में बुद्धत्व लाभ करेंगे, अपना आध्यात्मिक जीवन उसी अनुरूप बना लेते हैं। ऐसा बोधिसत्त्व मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक अभ्युन्नति पर ही अपनी दृष्टि को विशेष रूप से निबद्ध रखते हैं, यात्रा के पूर्व काल में उनमें बोधिचित्त का उत्पाद होता हैं। बोधिलाभ करने के उद्देश्य से वे संकल्पबद्ध रहते

हैं, ऐसा इसलिए होता है कि उनका चित्ताशय आभ्यन्तरीण-सृष्ट संकल्प के द्वारा निर्मल रहता है। यही कारण है कि वे बुद्धज्ञानकलापों को सम्पादन करने के लिए उद्यत हो जाते हैं।[5]

बोधिसत्त्व में दसबल, जगत का उद्धार करने का सामर्थ्य आदि अनेक श्रेष्ठ गुणों से परिपूर्ण होने का प्रयास करते हैं। इनमें बोधिसत्त्वावस्थारूप जो चरम लक्ष्य है, उसी प्राप्ति के लिए प्रेरणा बनी रहती है और इसी के द्वारा प्रवृत होकर ये आध्यात्मिक-पक्ष में सतत आगे वृद्धि करने का प्रयास करते हैं। ऐसे प्रयासों के फलीभूत होने से बोधिसत्त्व प्रथम भूमि में आरूढ़ हो जाते हैं। इसे प्रमुदिता कहने का आशय ही यही है कि इसमें बोधिसत्त्व को प्रकृष्ट-मोद या आनन्द की अनुभूति होती है। प्रज्ञा को जागृत करके सम्यक् ज्ञान की अनुभूति करके सर्वप्रथम इन्द्रियों को अपने अनुभूत कर लेते हैं।

तत्पश्चात बोधिसत्त्व दस महाप्रणिधान (संकल्प) करते हैं-

1. सभी बुद्धों की पूजा-आराधना करना।[6]

---

[5] दसभूमिकसूत्रम, पृ. 2

[6]सोऽस्यां प्रमुदितायां बोधिसत्त्वभूमौ स्थितः सन् इमान्येवंरूपाणि महाप्रणिधानानि महाव्यवसायान् महाभिनिर्हारानभिनिर्हरति यदुत अशेषनिःशेषानवशेषसर्वबुद्धपूजोपस्थापनाय सर्वाकारवरोपेतमुदाराधिमुक्तिविशुद्धं धर्मधातुविपुलमाकाशधातुपर्यवसानमपरान्तकोटिनिष्ठं सर्वकल्पसंख्याबुद्धोत्पादंसंख्याप्रतिप्रस्रब्धं महापूजोपस्थानाय प्रथमं महाप्रणिधान मभिनिर्हर-ति। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 9-10

2. सभी बुद्धों के द्वारा कहे गए सद्धर्मों का रक्षण करना।[7]
3. तुषितभवन में अवस्थान से महापरिनिर्वाणपर्यन्त बुद्ध ने जिन कार्यों का अनुष्ठान किया है उनका अनुष्ठान करके निर्वाणाभिमुख होना।[8]
4. सभी भूमियों का परिशोधन करना, जिससे बोधिचित्त का उत्पाद हो सके।[9]
5. सभी प्राणियों का आध्यात्मिक-परिपाक सम्पादन करें जिससे बुद्धों के द्वारा निर्दिष्ट धर्म में प्रवेश पाया जा सके और सर्वज्ञ ज्ञान में प्रतिष्ठान प्राप्त करें।[10]

---

[7]यदुत..सर्वतथागतभाषितधर्मनेत्रीसंधारणाय..सर्वबुद्धबोधिसत्त्वसुपरिग्रहाय सर्वसम्यक्सं बुद्धशासनपरिरक्षणाय....बुद्धोत्पादसद्धर्मपरिग्रहायद्वितीयम्। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 10

[8]यदुत सर्वबुद्धोत्पादनिरवशेषसर्वलोकधातुप्रसरेषु तुषितभवनवासमादिं कृत्वा च्यवनासंक्र मणगर्भस्थितिजन्मकुमारक्रीडान्तःपुरवासाभिनिष्क्रमणदुष्करचर्याबोधिमण्डोपसंक्र मणमारघर्षणाभिसंबोध्यध्येषणमहाधर्मचक्रप्रवर्तनमहापरिनिर्वाणोपसंक्रमणाय पू जाधर्मसंग्रहप्रयोगपूर्वंगमं.कृत्वा.सर्वत्रैककालविवर्तनाय...बुद्धोत्पाद....यावन्महाप रिनिर्वाणोपसंक्रमणाय तृतीयम्। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 10

[9]यदुत
सर्वबोधिसत्त्वचर्याविपुलमहद्गताप्रमाणासंभिन्नसर्वपारमितासंगृहीतसर्वभूमिपरिशो धनं
साङ्गोपाङ्गनिर्हारसलक्षणसंवर्तविवर्तसर्वबोधिसत्त्वचर्याभूतयथावद्भूमिपथोपदेश पारमितापरिकर्मावदानुशासन्यनु-
प्रदानोपस्तब्धचित्तोत्पादाभिनिर्हाराय...चर्या...चित्तोत्पादाभिनिर्हाराय चतुर्थम्। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 10

[10]यदुत
निरवशेषसर्वसत्त्वधातुरूप्यरूपिसंज्ञासंज्ञिनैवसंज्ञिनासंज्ञाण्डजजरायुजसंस्वेदजौपपा दुक-

6. सभी लोक धातुओं के प्रकार भेद की अवगति करना।[11]
7. सभी बुद्धक्षेत्रों का परिशोधन करना।[12]
8. महायान में प्रवेश करना।[13]
9. सभी बोधिसत्त्वचर्या के अनुरूप अनुष्ठान करना एवं सभी परिश्रम अव्यर्थ करना।[14]

त्रैधातुकपर्यापन्नषड्गतिसमवसृतसर्वोपपत्तिपर्यापन्ननामरूपसंगृहीताशेषसर्वसत्त्व धातुपरिपाचनायसर्वबुद्धधर्मावतारणायसर्वगतिसंख्याव्यवच्छेदनायसर्वज्ञज्ञानप्रतिष्ठापनाय.सत्त्वधातु.सर्वसत्त्वधातुपरिपाचनाय पञ्चमम्। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 10

[11]यदुत...निरवशेषसर्वलोकधातुविपुलसंक्षिप्तमहद्गताप्रमाणसूक्ष्मौदारिकव्यत्यस्तावमूर्ध समतलप्रवेशसमवरसरणानुगतेन्द्र जालविभागदशदिगशेषविमात्रताविभागप्रवेशज्ञानानुगमप्रत्यक्षतायैलोकधातुलोकधातुवैमात्र्यावतारणाय षष्ठम्। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 10

[12]यदुत.सर्वक्षेत्रैकक्षेत्रैकक्षेत्रसर्वक्षेत्रसमवसरणपरिशोधनमप्रमाणबुद्धक्षेत्रप्रभाव्यूहालंकारप्रतिमण्डितं.सर्वक्लेशापनयनपरिशुद्धपथोपेतमप्रमाणज्ञानाकरसत्त्वपरिपूर्णमुदारबुद्धविषयसमवसरणं
यथाशयसर्वसत्त्वसंदर्शनसंतोषणाय...बुद्धक्षेत्र...सर्वबुद्धक्षेत्रपरिशोधनाय सप्तमम्। दसभूमिकसूत्रम, पृ.10

[13] यदुत सर्वबोधिसत्त्वैकाशयप्रयोगतायै निःसपत्नकुशलमूलोपचयाय एकालम्बनसर्वबोधिस-
त्त्वसमतायै.अविरहितसततसमितबुद्धबोधिसत्त्वसमवधानाय यथेष्टबुद्धोत्पादसंदर्शनाय.
स्वचित्तोत्पादतथागतप्रभावज्ञानानुगमाय अच्युतानुगामिन्यभिज्ञाप्रतिलम्भाय.सर्वलोकधात्वनुविचरणाय सर्वबुद्धपर्षन्मण्डलप्रतिभासप्राप्तये सर्वोपपत्तिस्वशरीरानुगमाय अचिन्त्यमहायानोपेततायै
बोधिसत्त्वचर्याचरणाव्यवच्छेदाय...चर्या...महायानावतारणाय अष्टमम्। दसभूमिकसूत्रम, पृ.10

[14]यदुत अविवर्त्यचक्रसमारूढबोधिसत्त्वचर्याचरणाय अमोघकायवाङ्मनस्कर्मणे सहदर्शन नियतबुद्धधर्मत्वाय सहघोषोदाहारज्ञानानुगमाय सहप्रसादक्लेशविनिवर्तनाय महा

10. अभिसम्बोधिमहाज्ञान एवं अभिज्ञानिष्पादन करना।[15]

इस अवस्था में अवस्थान कर बोधिसत्त्व को यह उपलब्धि होती है कि बुद्ध का धर्म गम्भीर है, पाप से रहित है, शान्तरूप है, शून्य है, इनमें कोई कारण नहीं है, इसका कोई लक्ष्य नहीं है, कलंक से मुक्त है, सीमाशून्य है एवं इसकी उपलब्धि दुष्कर है। वह चिन्तन करता है कि अविद्या के कारण प्राणियों में दुःख उत्पन्न होता है, यह सोचकर बोधिसत्त्व मन में संकल्पबद्ध होता है कि प्राणिवर्ग को मोह से मुक्त कराकर निर्वाण में प्रतिष्ठित करूँगा। इसके अतिरिक्त वह सांसारिक जीवन के सभी तरह के ऐश्वर्य एवं सुखों का परित्याग करता है।[16] विभिन्न भूमियों में नाना प्रभाव अथवा बलों का आविर्भाव होता है- निष्क्रमण का सामर्थ्य, समाधियों का बल, बुद्धों के दर्शन की शक्ति, निम्मित-कायों का पहचानना, लोक-धातुओं को कंपायमान करना अथवा अथवा अवभासित करना, निर्माण-

---

भैषज्यराजोपमाश्रयप्रतिलम्भाय चिन्तामणिवत्कायप्रतिलम्भाय सर्वबोधिसत्त्वचर्या चरणाय...चर्या...अमोघसर्वचेष्टतायै नवमम्। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 10

[15]यदुत सर्वलोकधातुष्वनुत्तरसम्यक्संबोध्यभिसंबोधाय एकवालपथाव्यतिवृत्तसर्वबालपृथग्जनजन्मोपपत्यभिनिष्क्रमणविकुर्वणबोधिमण्डधर्मचक्रप्रवर्तनमहापरिनिर्वाणोपदर्शनाय महाबुद्धविषयप्रभावज्ञानानुगमाय सर्वसत्त्वधातुयथाशयबुद्धोत्पादक्षणक्षणविभङ्गविबोधप्रशमप्रापणसंदर्शनाय एकाभिसंबोधिसर्वधर्मनिर्माणस्फरणाय एकघोषोदाहारसर्वसत्त्वचित्ताशयसंतोषणाय महापरिनिर्वाणोपदर्शनचर्याबलाव्यवच्छेदाय महाज्ञानभूमिसर्वधर्मव्यवस्थापनसंदर्शनाय धर्मज्ञानर्द्धिमायाभिज्ञासर्वलोकधातुस्फरणाय अभिसंबोधिमहाज्ञानाभिज्ञाभिनिर्हाराय दशमम्। दसभूमिकसूत्रम, पृ.10

[16] दसभूमिकसूत्रम, पृ. 4-5

काय प्रदर्शित करना एवं अनेक कल्पों तक जीवित रहना।[17] जो बोधिसत्त्व इस प्रमुदिता भूमि में दृढ़रूप से प्रतिष्ठित हो जाता है वह जम्बुद्वीप के ऊपर आधिपत्य लाभ करने में समर्थ होता है।

द्वितीय भूमि (विमला**)**

जो बोधिसत्त्व की आदर्शावस्था लाभ करने में अनुप्राणित हैं वे अपनी आध्यात्मिक यात्रा की प्रथम भूमि में स्वयं को परिष्कृत एवं परिमार्जित करते हैं। वे अपने आध्यात्मिक जीवन में उत्तरोतर श्रेष्ठ भूमि में जाने के लिए, अपनी गति अविछिन्न रूप में जारी रखते हैं, श्रद्धा से पूर्ण रहकर वे विमला नामक भूमि में आरोहण करने में समर्थ होते हैं। ऐसा इस भूमि के नाम से स्पष्ट होता है कि उनके अन्दर किसी तरह का कोई मल शेष नहीं रहता है। इस अवस्था में आरोहण होने के पश्चात् बोधिसत्त्व के दसविध आशय अभिव्यक्त होते हैं।[18] बोधिसत्त्व सम्यक् कर्मान्त से सम्बन्धित दस उत्कृष्ट गुणों का पालन करता है- क्रमशः ऋजु, मृदु, कर्मण्य, दम, शम, कल्याण, असंतुष्ट, अनपेक्ष, उदार एवं महात्म्य[19] आदि। इस प्रकार ये दस कर्मपथ कुशल तरह से सम्पन्न होते हैं। सर्वप्रथम काय सम्बन्धी

---

[17] गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, *बौद्ध धर्म का विकास,* द्वितीय संस्करण, हिन्दी समिति सूचना विभाग, लखनऊ, 1976, पृ. 298

[18] यदुत ऋज्वाशयता च मृद्वाशयता च कर्मण्याशयता च दमाशयता च शमाशयता च कल्याणाशयता च असंसृष्टाशयता च अनपेक्षाशयता च उदाराशयता च माहात्म्याशयता च। इमे दश चित्ताशयाः प्रवर्तन्ते। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 15

[19] गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, *बौद्ध धर्म का विकास,* द्वितीय संस्करण, हिन्दी समिति सूचना विभाग, लखनऊ, 1976, पृ. 288

तीन, यथा- प्राणानिपात, चौर्य एवं काम एवं मिथ्याचार से विरति द्‌वितीय वाचा से सम्बन्धी, यथा- अनृतवचन, पिशुनवचन, कर्कशवचन एवं असम्बद्‌ध अथवा निरर्थक प्रलाप से विरति तृतीय मन से सम्बन्धित, यथा- लोभ, ईर्ष्या, त्याग, कुदृष्टि से विरति आदि।[20] इस भूमि में अवस्थान करने वाले बोधिसत्त्व ऐसा अनुभव करते हैं कि उनकी दृष्टि में आभासित असंख्य बुद्‌ध महात्याग एवं शीलपारमिता की पवित्रता लाभ करने में समर्थ होते हैं। इस भूमि में बोधिसत्त्व के प्रियवादिता एवं शीलपारमिता रूप गुण प्रधान रूप से प्रादुर्भूत होते हैं।[21] वे सात प्रकार के रत्नों से सम्पन्न हो चार द्‌वीप प्रधान अधीश्वर बन जाते हैं।

इस भूमि में बोधिसत्त्व के परहित उद्‌देश्य का वृहत् विस्तार मिलता है। अपने मन में लोगों के प्रति अथाह उदारता का भाव रखता है। वह अपने उद्‌देश्य के प्रति दृढ़ रहने के साथ निष्कपट भी रहता है। इसके अतिरिक्त काम भावनाओं से मुक्त रहता है जो उसकी साधना हेतु बाधक होती है। वह अपने शिक्षक एवं त्रिरत्न के प्रति अनादर की भावना नहीं रखता है, बल्कि उनमें श्रद्‌धा के साथ निष्ठा रखता है। इसके साथ ही इस भूमि की साधना करने वाला बोधिसत्त्व अपनी

---

[20] अदत्तादानात्प्रतिविरतः खलु पुनर्भवति स्वभोगसंतुष्टः परभोगानभिलाषी अनुकम्पकः. स एवं प्रविचिनोति एषां दशानां अकुशलानां कर्मपथानां समादानहेतोर्निरयतिर्यग्यो नियमलोकगतयः प्रज्ञायन्ते। पुनः कुशलानां कर्मपथानां समादानहेतोर्मनुष्योपपत्तिमादिं कृत्वा यावद्‌भवाग्रमित्युपपत्तयः प्रज्ञायन्ते। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 15

[21] तस्य चतुर्भ्यः संग्रहवस्तुभ्यः प्रियवद्‌यता अतिरिक्ततमा भवति। दशभ्यः पारमिताभ्यः शीलपारमिता अतिरिक्ततमा भवति। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 18

अल्प सफलता से संतुष्ट नहीं होता है। ऐसा बोधिसत्त्व न तो किसी की प्रशंसा करता है और न ही किसी की बुराई। बोधिसत्त्व किसी भी प्रकार की अपवित्रता से दूर रहकर आत्मसंयमी, शान्त एवं श्रेष्ठ भाव चित्त में पैदा करता है।

तृतीय भूमि (प्रभाकरी**)**

बोधिसत्त्व अपने आध्यात्मिक जीवन में अग्रसर होते हुए तृतीय भूमि में आरोहण करते हैं। इस भूमि में आरोहण कर वे दसविध चित्ताशय में दश प्रकार से मनस्कार से युक्त होकर विचरण करते हैं। उसका परिगणन निम्न रूप से किया जाता है- शुद्धचित्ताशय में, स्थिर चित्ताशय में, निर्विचित्ताशय में, अविराग चित्ताशय में, दृढ़चित्ताशय में, अविनिर्वत चित्ताशय में, उतप्तचित्ताशय में एवं अतिरिक्त चित्ताशय में मनस्कार आदि।[22] इस भूमि में बोधिसत्त्व ऐसा चिन्तन करके विहार करते हैं कि इस जगत की सभी उत्पन्न होने वाली वस्तुएँ जिनका धर्म है अनित्य, दुःखरूप, आस्था-शून्य एवं क्षणभर में उत्पाद विनाशशील हैं। वे अतीत अवस्था में संक्रान्त नहीं हो सकती और अनागत काल में भिन्न अवस्था लाभ नहीं कर सकती है। वर्तमान अवस्था में भी उनका पृथक रूप से अवधारण

---

[22]दशभिश्चित्ताशयमनस्कारैराक्रमति। कतमैर्दशभिः? यदुत शुद्धचित्ताशयमनस्कारेण च स्थिरचित्ताशयमनस्कारेण च निर्विच्चित्ताशयमनस्कारेण च अविरागचित्ताशयमनस्कारेण च अविनिवर्तचित्ताशयमनस्कारेण च दृढचित्ताशयमनस्कारेण च उत्तप्तचित्ताशयमनस्कारेण च अतृप्तचित्ताशयमनस्कारेण च उदारचित्ताशयमनस्कारेण च माहात्म्यचित्ताशयमनस्कारेण च। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 19

सम्भव नहीं है।[23] प्राणी की काय शोक रूप, सुख-दुःख की शृंखला में आबद्ध और दुःखस्कन्धरूप है। उसमें दौर्मनस्य एवं मानसिक उद्वेग लगा रहता है।[24] इस भूमि में बोधिसत्त्व विशेषतः त्याग की भावना का विकास करता है। निःस्वार्थ प्राणियों के जीवन को खुशियों से भरता है। बोधिसत्त्व इन भूमियों में सत्य मार्ग के अनुसन्धान को निरन्तर बनाए रखता है। वह बड़े से बड़ा त्याग करने को तत्पर रहता है कि उसके बदले एक शिक्षाप्रद पंक्ति सुनने को मिले। किसी भी राजनैतिक प्रभाव के द्वारा मिलने वाले धन से दूर रहता है एवं बोधिसत्त्व किसी भी प्रकार की सह-अपराधिता से दूर रखता है। इस भूमि में बोधिसत्त्व वस्तुओं के वास्तविक स्वभाव से परिचित होकर उन्हें उसी रूप में देखता है। वह निरन्तर आत्म-परीक्षण एवं साधना करता है।

इस भूमि में बोधिसत्त्व अवेक्षण करते हैं कि चेतन प्राणी-समूह असंख्य अशांतियों के द्वारा आक्रान्त है। वे अपने अनभिव्यक्त वीर्य का जागरण करा कर अनुभव करते हैं कि सभी प्राणियों को जल्द से जल्द दुःख से मुक्त कराने का उत्तरदायित्व उन्हीं पर है। वे उन्हीं उपायों का चिन्तन करते हैं जिनके द्वारा

---

[23]sनित्यतां च सर्वसंस्कारगतस्य यथाभूतं प्रत्यवेक्षते, दुःखतां च अशुभतां च अनाश्वासिकतां च विप्रलोपतां च अचिरस्थितिकतां च क्षणिकोत्पादनिरोधतां च पूर्वन्तासंभवतां च अपरान्तासंक्रान्तितां च प्रत्युत्पन्नाव्यवस्थिततां च सर्वसंस्कारगतस्य प्रत्यवेक्षते। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 19

[24] दसभूमिकसूत्रम, पृ. 8

पूर्वोक्त आर्त प्राणियों को निर्वाण में प्रतिष्ठित किया जा सकें।[25] वे चिन्तन करके अन्तिम निष्कर्ष पर पहुँचते है कि सर्व प्रकार की बाधा से शून्य मोक्ष ज्ञान को छोड़कर लोगों को दुःख से मुक्त कराने एवं निर्वाण में प्रतिष्ठापित करने का कोई अन्य उपाय नहीं है। वह अनुभव करके चार ध्यान, चार समापत्ति, चार ब्रह्मविहार एवं पाँच अभिजनों को प्राप्त करता है। जिससे धर्म एवं अनुधर्म के यथार्थ स्वरूप की उपलब्धि हो जाए।

आध्यात्मिक उन्नति को चाहने वाले व्यक्ति इस भूमि में अवस्थान करते हैं वे इंद्र के समान बन जाते हैं। बोधिसत्त्व सभी प्राणियों को सर्वविध इन्द्रियोंपभोगोकांगा से मुक्त होने का उपाय बताते हैं। प्रमुदिता भूमि में बोधिसत्त्व पूर्वभूमि की अपेक्षा अधिक आध्यामिक उन्नति को प्राप्त होता है।

चौथी भूमि (अर्चिष्मति)

जो बोधिसत्त्व बुद्धत्व लाभ करने के लिए आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर होते हैं वे प्रभाकरी भूमि का अतिक्रमण कर अर्चिष्मति भूमि में आरोहण करता है।[26] इस स्थिति में बोधिसत्त्व का आध्यात्मिक संभार अधिकतर समृद्ध रहता है। इस भूमि में बोधिसत्त्व एकान्त एवं निर्जन जंगल में जाकर साधना करता है। बोधिलाभ के तदनन्तर जिस तरह के उद्गार उनके निकलते हैं, ऐसे संकल्प पूर्व

[25] दसभूमिकसूत्रम, पृ. 10

[26] दसभूमिकसूत्रम, पृ. 11

में भी करते हैं- यथा "मैंने गम्भीर. शान्त, रजोगुणहीन, प्रभास्वर, असंस्कृत एवं अमृत धर्म का लाभ लिया है। मैं देशना करूँ तो भी दूसरा इसे न जान पायेगा। क्यों न मौन रहकर एकान्त एवं निर्जन स्थान पर वास करूँ।[27] बोधिसत्त्व संन्यासी की तरह जो उस सत्य को स्वीकारता है जो पम्परागत रूप से संन्यासियों हेतु मुक्ति का मार्ग बना है। अनुशासन के समस्त तरीकों को स्वीकार करके किसी भी तरह की कामुक प्रवृति में आलिप्त नहीं होता है। बोधिसत्त्व समस्त वस्तुओं को त्याग देता है तथा निष्क्रिय भाव से अपनी साधना की पूर्णता के लिए अग्रसर होता है। बोधिसत्त्व अपनी समस्त आन्तरिक एवं बाह्य वस्तुओं का त्याग करने में किंचित मात्र भी हिचकिचाहट महसूस नहीं करता है, जब तक शाश्वत वस्तुओं की वास्तविकता का ज्ञान नहीं कर लेता है तब तक वह पाँचवीं भूमि में प्रवेश नहीं करता है। *दसभूमिकसूत्र* के अनुसार इस भूमि में बोधिपक्ष्य धर्मों की किरणें बोधिसत्त्व का पाप एवं अज्ञानता को पूर्णरूपेण नष्ट कर देती है।[28] इसी भूमि में बोधिसत्त्व प्रतीत्यसमुत्पाद की सम्पूर्ण कड़ियों को जानता है, साथ ही वह सैतीस बोधिपक्ष्य धर्मों का अभ्यास करता है। बोधिपक्ष्य धर्मों का परिगणन इस तरह किया गया है – स्मृति सहित चार प्रकार के व्यापार (स्मृत्युपस्थान) यथा- काय,

---

[27] *गम्भीर सान्तो विरजः प्रभास्वर, प्राप्तों मि धर्मों अमृतोसंस्कृत। देशेय चाहं न परअरय जाने, यन्नून तृष्णी पवने वसेयं*। बु० च०, पृ. 748

[28] The M.S Al. explains that this Bhūmi is so called because the 'rays' of The Bodhipaksya-Dharma burn up the veil and obstruction of sin and ignorance. Hardayal, *The Bodhisattva Doctrine In Sanskrit Buddhist Literature*, Kegan paul, trench, trubner & co. ltd., London, 1931 p. 287

वेदना, चित्त और धर्म[29] द्वितीय चार प्रकार के उचित प्रयत्न, यथा जो विद्यमान न हो ऐसे अकुशल धर्म को उत्पन्न न होने देना, जो अकुशल धर्म समूह विद्यमान है उसका परिहार करना, जो कुशल धर्म उत्पन्न न हुआ है उसका उत्पादन करना, जो कुशल धर्म विद्यमान है उसका पूर्णतः सम्पादन करना।[30] तृतीय चार प्रकार के ऋद्धिपाद यथा- छन्द, समाधिप्रहाण, संस्कार समन्वागत इत्यादि।[31] एवं चतुर्थ में नीतिविषयक सामर्थ्य (इन्द्रिय) यथा- श्रद्धा, वीर्य, स्मृति, समाधि एवं प्रज्ञा।[32] पंचम में बल[33] षष्ट में सम्बोधिअंग[34] एवं आठ मार्ग आदि।[35] इस स्थिति

---

[29] बोधिसत्त्वोऽस्यामर्चिष्मत्यां बोधिसत्त्वभूमौ प्रतिष्ठितोऽध्यात्मं काये कायानुदर्शी विहरति आतापी संप्रजानन् स्मृतिमान् विनीय लोकेऽभिध्यादौर्मनस्ये बहिर्धा काये...अध्यात्मं बहिर्धा काये। एवमेवाध्यात्मं वेदनासु बहिर्धा वेदनासु अध्यात्मं बहिर्धा वेदनासु। एवमध्यात्मं चित्ते बहिर्धा चित्तेऽध्यात्मं चित्ते। अध्यात्मं धर्मेषु धर्मानुदर्शी...बहिर्धा धर्मेषु धर्मानुदर्शी...एवमध्यात्मं बहिर्धा धर्मेषु...। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 24

[30] सोऽनुत्पन्नानां पापकानामकुशलानां धर्माणामनुत्पादाय च्छन्दं जनयति व्यायच्छते वीर्यमारभते चित्तं प्रगृह्णाति सम्यक्प्रणिदधाति। उत्पन्नानां पापकानामकुशलानां धर्माणां

प्रहाणाय। अनुत्पन्नानां कुशलानां धर्माणामुत्पादाय। उत्पन्नानां कुशलानां धर्माणां स्थितयेऽसंप्रमोषाय वैपुल्याय भूयोभावाय भावनाय परिपूरये। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 24

[31] छन्दसमाधिप्रहाणसंस्कारसमन्वागतं ऋद्धिपादं भावयति। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 24

[32] स श्रद्धेन्द्रियं भावयति विवेकनिश्रितं वीर्येन्द्रियं स्मृतीन्द्रियं समाधीन्द्रियं प्रज्ञेन्द्रियं स , श्रद्धाबलं भावयति॥ दसभूमिकसूत्रम, पृ. 24

[33] वीर्यबलं स्मृतिबलं समाधिबलं प्रज्ञाबलं। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 24

[34] स्मृतिसंबोध्यङ्गं भावयति धर्मप्रविचय, वीर्य, प्रीति, प्रस्रब्धि, समाधि, उपेक्षा। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 24

[35]सम्यक्दृष्टिं भावयति सम्यक्संकल्पं सम्यग्वाचं सम्यक्कर्मान्तं सम्यगाजीवं सम्य ग्व्यायामं सम्यक्स्मृतिं सम्यक्समाधिं॥ दसभूमिकसूत्रम, पृ. 24

में बोधिसत्त्व का आत्मा, सत्त्व, जीव, पोष, पुद्गल, स्कन्ध धातु आयतन के सम्बन्ध में जो अभिनिवेश है वह नष्ट हो जाता है। इस भूमि में मन भी श्रेष्ठ गुण समूह द्वारा गुण सम्पन्न होकर विशेष उत्कर्ष लाभ करता है। यहाँ अन्य पारमिता से वीर्य पारमिता समाधिक प्राधान्य लाभ करती है। इन सभी का कुशलतापूर्वक अभ्यास कर लेने के पश्चात् पाँचवीं भूमि में प्रवेश करता है।

पाँचवीं भूमि (सुदर्जया**)**

इस भूमि में आरोहण होने के पश्चात् उसकी इस यात्रा के किसी प्रकार विच्छेद होने की सम्भावना अभी भी नहीं रहती है। बोधिसत्त्व एक-एक भूमि का आरोहण करते हुए उस मार्ग पर अग्रसर होकर आध्यात्मिक भूमि में वृद्धि करते जाते हैं। सुदुर्जया के नाम से स्पष्ट है कि इसको जय लाभ करना दुष्कर होता है।[36] बोधिसत्त्व चतुर्विध का यथार्थ प्राप्त करते हैं। दुःख, दुःख की उत्पत्ति (दुःख समुदय), दुःख का विनाश (दुःख निरोध), दुःख करने का उपाय (दुःख निरोधागामिनी प्रतिपद) इस स्थिति में उनको विभिन्न प्रकार के सत्य की उपलब्धि होती है- संवृति सत्य, परमार्थ सत्य, लक्षण सत्य, विभाग सत्य, निस्तीर्णसत्य, वस्तुसत्य, प्रभवसत्य, क्षयानुत्पाद, मार्गाज्ञानावतारसत्य एवं तथागतज्ञान सत्य प्रभृति।[37]

---

[36] दसभूमिकसूत्रम, पृ. 13

[37] इदं दुःखमार्यसत्यमिति यथाभूतं प्रजानाति। अयं दुःखसमुदयः आर्यसत्यमिति यथाभूतं प्रजानाति। अयं दुःखनिरोधः आर्यसत्यमिति यथाभूतं प्रजानाति। इयं

इस भूमि में बोधिसत्त्व समस्त प्राणी जगत की वास्तविकता को जानकर इस निष्कर्ष पर पहुँच जाता है कि संसार के सभी प्राणी काम भावना, घृणा एवं अविद्या की भावना से जल रहे हैं और इस कारण दुःखी है। इस भूमि में बुद्धों की शरण में रहता है। *दसभूमिक सूत्र* के अनुसार इस भूमि में सांसारिक वस्तुओं को देखकर सोचता है कि सांसारिक जीव क्यों अपने शरीर के पीछे क्यों परेशान रहते हैं? अपनी अविद्या के कारण कभी न समाप्त न होने वाली तृष्णा से वशीभूत होकर असीमित दुःखों का निर्माण करते हैं। इस भूमि में रहकर ज्ञान की समस्त विधाओं से व्यक्तित्व को परिमार्जित करके बोधिसत्त्व बुद्ध द्वारा देशित सिद्धान्तों की शिक्षा से प्राणियों एवं स्वयं का उद्धार करता है। बोधिसत्त्व प्राणिमात्र की आध्यात्मिक एवं नैतिक रूप से पुनरुज्जीवन कराने में समर्थ होती है। वे शास्त्र एवं साहित्य पर अधिकार लाभ कर सभी प्राणियों का आध्यात्मिक जीवन में परिपाक कराते हैं। इस भूमि में उनकी ध्यान पारमिता अन्य पारमिता

दुःखनिरोधगामिनी
प्रतिपदार्यसत्यमिति यथाभूतं प्रजानाति। स संवृतिसत्यकुशलश्च वति। परमार्थसत्यकुशलश्च भवति। लक्षणसत्यकुशलश्च भवति। विभागसत्यकुशलश्च भवति। निस्तीरणसत्यकुशलश्च भवति। वस्तुसत्यकुशलश्च भवति। प्रभवसत्यकुशलश्च भवति। क्षयानुत्पादसत्यकुशलश्च भवति। मार्गज्ञानावतारसत्यकुशलश्च भवति। सर्वबोधिसत्त्वभूमिक्रमानुसंधिनिष्पादनतया यावत्तथागतज्ञानसमुदयसत्यकुशलश्च भवति। स परसत्त्वानां यथाशयसंतोषणात्संवृतिसत्यं प्रजानाति। एकनयसमवसरणात्परमार्थसत्यं प्रजानाति। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 27

से अधिक प्राधान्य लाभ करती है। वे सत्य का साक्षात्कार करने में समर्थ होते हैं।[38]

छठवीं भूमि (अभिमुखी)

इस भूमि में बोधिसत्त्व में प्रज्ञा का प्राधान्य रहता है। बोधिसत्त्व इस भूमि में दस प्रकार की धर्मसमता का परिचिन्तन कर इस भूमि में आरोहण करते हैं।[39] सभी धर्म (वस्तु या वस्तु की अवस्था) कारण, लक्षण एवं उत्पत्ति से शून्य है इत्यादि।[40] इस अवस्था में पदार्पण होने के पश्चात् बोधिसत्त्व में क्षान्ति सम्पन्न होकर वस्तुओं की अवस्था का परिचिन्तन कर सकने योग्य हो जाते हैं। इसके पश्चात् वे प्रतीत्यसमुत्पाद का प्रतिलोम एवं अनुलोम पद्धति से अवलोकन करते हैं।

दसभूमिकसूत्र के अनुसार इस भूमि में प्रज्ञापारमिता की साधना करके संसार की सभी वस्तुओं को प्रज्ञा चक्षु से देखता है। इसमें बोधिसत्त्व चिन्तन करता है कि संसार के समस्त पाप एवं दुःख चित्त में उत्पन्न तृष्णा भाव के कारण

---

[38] दसभूमिकसूत्रम, पृ. 13

[39] स दशभिर्धर्मसमताभिरवतरति। कतमाभिर्दशभिः? यदुत सर्वधर्मानिमित्तसमतया च सर्वधर्मालक्षणसमतया च सर्वधर्मानुत्पादसमतया च सर्वधर्माजाततया च। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 31

[40] दसभूमिकसूत्रम, पृ. 14

उत्पन्न होते हैं।[41] इस भूमि में बोधिसत्त्व की प्रज्ञापारमिता अन्य पारमिता की अपेक्षा अधिक प्राधान्य लाभ करती है।

सातवीं भूमि (दूरंगमा)

इस भूमि में बोधिसत्त्व उपाय, प्रज्ञा एवं ज्ञान से निष्पन्न दश प्रकार के मार्गान्तररम्भविशेष के द्वारा युक्त होकर विचरण करते हैं।[42] उनका मन आदर्श-विशुद्धि लाभ करता है। बोधिसत्त्व तीन प्रकार की समाधियों का निरन्तर अनुष्ठान करते हैं, यथा- शून्यता, आनिमित्त एवं अप्रणिहित।[43] इस भूमि में बोधिसत्त्व को आभास होता है कि समस्त वस्तुओं निरात्म एवं सत्ताशून्य वाली है। जीव या पुद्गल कोई भी वस्तु नहीं है। चार ब्रह्मविहार भी उनकी साधना का अभिन्न अंग होता है। बोधिसत्त्व कामधातु, रूपधातु और अरूपधातु के परस्पर भेद की अनुभूति कर लेते हैं। वे राग, द्वेष एवं क्लेश की ज्वालाओं को प्रशमन करने में समर्थ होते हैं।

इस भूमि में बोधिसत्त्व दस पारमिताओं का अनुष्ठान करते हैं, यथा- दान, शील, क्षान्ति, वीर्य, ध्यान, प्रज्ञा, उपायकौशल, प्रणिधान, बल एवं ज्ञान।[44] इस

---

[41] दसभूमिकसूत्रम, पृ. 14

[42]स दशभिरुपायप्रज्ञाज्ञानाभिनिर्हृतैर्मार्गान्तरारम्भविशेषैराक्रमति। कतमैर्दशभिः? यदुत शून्यतानिमित्ताप्रणिहितसमाधिसुपरिभावितमानसश्च भवति। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 36

[43] दसभूमिकसूत्रम, पृ. 16

[44] दसभूमिकसूत्रम, पृ. 17

भूमि में बोधिसत्त्व की उपायकौशल पारमिता अन्य पारमिता से अधिक प्राधान्य लाभ करती है।

आठवीं भूमि (अचला)

बोधिसत्त्व आध्यात्मिक साधना के क्रम में अपनी साधना के चरम पर धीरे-धीरे अग्रसर होते हैं। इस भूमि पर आरूढ़ होने के पश्चात् बोधिसत्त्व की परावृति होने की सम्भावना नहीं रहती है।[45] इस भूमि में आरोहण करने के समय बोधिसत्त्व को बुद्ध समूह इस तथ्य से अवगत करवाते हैं कि वे बुद्धों का दशबल एवं चार वैशारध लाभ करने हेतु अभी समर्थ नहीं हुए हैं। वे निर्देश करते हैं कि सभी अज्ञ जनसाधारण नाना क्लेशों से युक्त है एवं विविध वितर्कों के द्वारा उनका मन अपहत है, अतः इन प्राणियों के उद्धार हेतु प्रयास करे।

अचला नामक भूमि में प्रवेश करने पर भी बोधिसत्त्व निर्वाण में प्रवेश करने में समर्थ नहीं होते हैं। क्योंकि निर्वाण में प्रवेश करने से सभी प्राणियों को दुःख से मुक्त करने का जो बोधिसत्त्व का उद्देश्य है वह समाप्त हो जायेगा।[46] इसीलिए बोधिसत्त्व निर्वाण में प्रवेश न करके लोक में ही अवस्थान करते हैं, उनकी कायिक, वाचिक और मानसिक क्रियाएँ निवृत हो जाती है।

---

[45] दसभूमिकसूत्रम, पृ. 17

[46] दसभूमिकसूत्रम, पृ. 17

इस भूमि में बोधिसत्त्व बुद्ध के समान सम्मान पाने का अधिकारी हो जाता है। उसके चरित्र की मुख्य विशेषता होती है कि वह समस्त प्राणी जगत के लिए प्रेम एवं करूणा की भावना का आविर्भाव करता है। वह पाँच प्रकार के पापकर्मों से विरत रहता है। बोधिसत्त्व किसी अन्य प्राणी के द्वारा सम्पन्न कार्यों से व्यथित नहीं होता है। दस प्रकार के श्रेष्ठ कार्यों में स्वयं को पारंगत करता है। जिस पेड़ के नीचे बोधिसत्त्व बैठता एवं सोता है उस पेड़, पत्तियों या किसी भी भाग को क्षति नहीं पहुँचाता है। बोधिसत्त्व का स्वभाव एकदम से शान्त एवं चित्त अत्यन्त निर्मल हो जाता है।

नवमीं भूमि (साधुमती**)**

इस भूमि में कुशल-अकुशल आदि की निष्पत्ति प्रकार को अवितथरूप से अवगत कराने में समर्थ होते हैं।[47] वे श्रावक, प्रत्येक बुद्ध, बोधिसत्त्व एवं तथागतयान के प्रतिपाद्य धर्म के स्वरूप से अवगत होते हैं। बोधिसत्त्व समस्त मनुष्य जगत में बुद्ध धर्म का प्रचार करते हैं। इस अवस्था में बोधिसत्त्व की इच्छा सभी सीमाओं का आतिक्रम कर विद्यमान रहती है। वे जो इच्छा करते हैं, वही घटित होता है। इस भूमि में बल पारमिता की प्राध्यानता सर्वाधिक होती है।

---

[47] सोऽस्यां साधुमत्यां बोधिसत्त्वभूमौ स्थितः कुशलाकुशलाव्याकृतधर्माभिसंस्कारं च यथाभूतं प्रजानाति। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 49

इस भूमि में पर समाधि की विशुद्धता होती है। इनमें बोधिसत्त्व कुशल, अकुशल एवं अव्याकृत धर्मों का साक्षात्कार करता है तथा मनः पर्याय की सिद्धता आ जाती है। इसमें बोधिसत्त्व दूसरे प्राणियों के मन की भावनाओं को जानने में समर्थ हो जाता है।[48]

दसवीं भूमि (धर्ममेघा**)**

इस भूमि में समाधि की विशुद्धता होती है। इस भूमि में दस प्रकार की समाधियां महत्वपूर्ण है। अन्त में बोधिसत्त्व में सर्वज्ञज्ञानविशेषाभिषेक नामक समाधि का आविर्भाव होता है।[49] इस भूमि में बोधिसत्त्व पुण्य और ज्ञान संसार एवं महाकरूणा को पूर्ण कर चुके हैं। इस भूमि में अपरिमित सर्वज्ञ ज्ञान होता है। इसीलिए यह ज्ञान पारमिता की भूमि है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बोधिसत्त्व को बुद्ध की पदवी तक पहुँचने के लिए अनेक ऐसे धर्मों की पालना करनी पड़ती है तब ही जाकर बोधिसत्त्व बुद्धत्व को प्राप्त करते है। ऐसे ही अनेक कुशल धर्मों की साधना करके ही बुद्धत्व पद का लाभ बोधिसत्त्व को होता है। साधना में विनय विपरीत आचरण से उसकी साधना बाधित हो सकती थी। इसीलिए साधना में उसे चित्त को एकाग्र रखना पड़ता है। बुद्ध होने के पश्चात् जिस दुर्लभ ज्ञान की अनुभूति करते हैं, उसी ज्ञान

---

[48] राजेन्द्र प्रसाद शाक्य, *बौद्ध दर्शन* पृ. 55

[49] स तस्य सर्वज्ञज्ञानविशेषाभिषेकवतः समाधेः सहप्रतिलम्भात्तस्मिन्महारत्नराजपद्मे निषण्णः संदृश्यते। दसभूमिकसूत्रम, पृ. 55

को उन सत्वों के मध्य प्रकट करने का प्रयास निरन्तर करते हैं जब बुद्ध सत्वों को किसी भी बिन्दु पर धर्मों का उपदेश करते थे, तो वह उनके चित्त को समग्र रूप से सन्तुष्ट करते थे। यही बौद्ध धर्म का सबसे बड़ा सबल पक्ष था। इस भूमि में ज्ञानपारमिता अधिक प्राधान्य लाभ करती है। साधना ही समस्त धर्मों की वह रण भूमि है जहाँ योद्धा रुपी साधक को हर तरह से सावधान रहना पड़ता है, उसकी एक चूक उसके लिए घातक हो सकती है, इसलिए ऐसी बातों को ध्यान में रखकर ही वह धर्मों की कुशल साधना करता है। भूमियों के अतिरिक्त बौद्ध दर्शन में अनेक ऐसे धर्म है जो बोधिसत्त्वों को अभीष्ट की ओर अग्रसर करते हैं। भूमियों में बोधिसत्त्व को जीवन के यथार्थता का बोध होता है, जो उसके साधक जीवन हेतु अत्यावश्यक होते हैं। दसभूमिकसूत्र जो मूलतः भूमियों के क्रम पर आधृत है, उसके अनुसार बोधिसत्त्व की कुशल चर्या में इन भूमियों की उपादेयता महनीय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अभिधम्मत्थसंगहो, (1991) भदन्त रेवत धम्म एवं रामशंकर त्रिपाठी (अनुवादक एवं सम्पादक) वाराणसी: सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

अष्टसहिस्त्रका प्रज्ञापारमितासूत्र, (1883) प्रज्ञापारमिता मित्र एवं राजेन्द्र लाल (सम्पा.) कलकत्ता: बिब्लोथिका इन्डिका

विसुद्धिमग्गो, भाग 1 व 2 (1998) स्वामी द्वारिकादास शास्त्री (सम्पा. एवं अनु.) वाराणसी: बौद्ध भारती प्रकाशन

संयुक्तनिकाय, (2000) स्वामी द्वारिकादास शास्त्री (सम्पा. एवं अनु.) वाराणसी: बौद्ध भारती प्रकाशन

सुत्तनिपात, (1977) भिक्षु धर्मरक्षित (अनु.) दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड

सद्धम्मसंगहो, (1961) एस. मुखर्जी एवं महेश तिवारी (संशो.) नालन्दा: नवनालन्दा महाविहार

सद्धर्मपुंडरिकसूत्रं, (1993) परमानन्द सिंह (सम्पा.) वाराणसी: बौद्ध आकर ग्रन्थमाला

पलजोर, ट. (2015) *महायान बौद्ध धर्म का साधना-क्रम और काय व्यवस्था*, सारनाथ: केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन संस्थान.

पाण्डेय, गोविन्दचन्द्र, (1990) *बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास*, लखनऊ: उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान

सांकृत्यायन, राहुल, (1995) *बुद्धचर्या*, लखनऊ: भारतीय बौद्ध समिति, बुद्ध विहार, रिसालदार पार्क

सिन्हा, हरेन्द्र प्रसाद, (2007) *भारतीय दर्शन की रूपरेखा*, दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड

Dayal, H. (1932) *The Bodhisattva doctrine in Buddhist Sanskrit Literature*, London: Kegan Paul, Trench, Trubner & co., LTD.

Berkwitz, S. C. (ed.) (2006) *Buddhism in World Cultures*, California: ABC-GLIO, Inc.